

GUIDED POOJA SEVA



वास्तु पूजा विधि

Vastu Shanti Pooja — Complete Vidhi & Mantras

गृह शांति, वास्तु दोष निवारण और समृद्धि हेतु

यह मार्गदर्शिका पूजा का हर चरण — संकल्प, मंत्र, वास्तु-मंडल पूजन, हवन-आहुति, गृह प्रदक्षिणा और आरती — पूर्ण विधि-विधान सहित सरल एवं व्यवस्थित क्रम में बताती है।

1. पूजा का उद्देश्य एवं महत्व

वास्तु शास्त्र — प्राचीन भारतीय वास्तुकला का विज्ञान — घर, भूमि और उसमें निवास करने वालों के बीच ऊर्जा के संतुलन का ज्ञान है। वास्तु पुरुष वह दिव्य सत्ता है जो प्रत्येक भवन और भूखंड में निवास करती है। उनकी शांति और प्रसन्नता से घर में सुख, समृद्धि, स्वास्थ्य और पारिवारिक सौहार्द बना रहता है।

वास्तु पूजा/वास्तु शांति से घर की नकारात्मक ऊर्जाएं दूर होती हैं, वास्तु दोषों का निवारण होता है, और परिवार को ईश्वरीय सुरक्षा-कवच प्राप्त होता है।

महत्वपूर्ण: वास्तु पूजा गृह प्रवेश से पहले, निर्माण के दौरान या दोष-निवारण हेतु — किसी भी समय कराई जा सकती है। नियमित वार्षिक वास्तु शांति भी शुभ है।

2. वास्तु पूजा के प्रकार

प्रकार	अवसर	विशेषता
भूमि पूजन	निर्माण/खुदाई से पहले	भूमि माता और वास्तु पुरुष की अनुमति लेना।
वास्तु शांति	गृह प्रवेश से पहले	नए घर में प्रवेश से पूर्व पूर्ण वास्तु शांति।
वास्तु दोष निवारण	पुराने घर में समस्या	बीमारी, कलह, हानि — दोष पहचान और उपाय।
नवनिर्माण वास्तु	नव-निर्मित भवन	नींव पूजन से लेकर गृह प्रवेश तक संपूर्ण।
वार्षिक वास्तु पूजा	प्रतिवर्ष	घर में सकारात्मक ऊर्जा का नवीनीकरण।

3. वास्तु पुरुष — कौन हैं वे?

पुराणों के अनुसार ब्रह्मा जी की सृष्टि में एक अत्यंत शक्तिशाली सत्ता प्रकट हुई जो सब कुछ निगलने लगी। देवताओं ने मिलकर उसे पकड़ा और उत्तर-पूर्व की ओर मुख करके भूमि पर उल्टा लिटा दिया। ब्रह्मा जी ने उसे वरदान दिया — "प्रत्येक भवन और भूखंड में तुम्हारा निवास होगा और तुम्हारी पूजा होगी।" वही वास्तु पुरुष हैं।

वास्तु मंडल: वास्तु पुरुष के शरीर पर 45 देवताओं का वास है। सिर उत्तर-पूर्व (ईशान) में, पाँव दक्षिण-पश्चिम (नैऋत्य) में। केंद्र में ब्रह्मा जी विराजमान हैं।

4. वास्तु मंडल — नव दिशाओं के देवता

ईशान (NE) शिव / ईश आध्यात्मिकता, जल	उत्तर (N) कुबेर / सोम धन, समृद्धि	वायव्य (NW) वायु / मुख्य वायु, गति, संबंध
पूर्व (E) इंद्र / सूर्य ऊर्जा, नेतृत्व	ब्रह्म स्थान ब्रह्मा सृजन, केंद्र	पश्चिम (W) वरुण जल, फसल
आग्नेय (SE) अग्नि ऊर्जा, रसोई	दक्षिण (S) यम रक्षा, न्याय	नैऋत्य (SW) नैऋत दृढ़ता, सुरक्षा

5. पूजा से पहले तैयारी

विषय	तैयारी
घर की सफाई	पूजा से एक दिन पहले पूरे घर की सफाई करें। कोने-कोने की धूल हटाएं। घर का मुख्य द्वार साफ करें।
गोमूत्र / गंगाजल	पूजा से पहले गंगाजल या गोमूत्र से घर के सभी कमरों में छिड़काव करें।
यजमान	स्नान, स्वच्छ वस्त्र। उपवास या सात्विक भोजन। परिवार साथ रहे।
पूजा स्थान	घर के मध्य (ब्रह्म स्थान) में या पूर्वोत्तर कोने में पूजा चौकी रखें।
हवन	यदि हवन हो तो घर के बाहर या आंगन में हवन कुंड की व्यवस्था।

6. पूजा सामग्री सूची

- गणेश प्रतिमा/चित्र
- वास्तु पुरुष यंत्र / चित्र
- विश्वकर्मा चित्र
- 9 कलश (नव दिशाओं हेतु)
- मुख्य कलश (बड़ा)
- लाल/पीला कपड़ा (चौकी)
- अक्षत (कच्चे चावल)
- रोली / कुमकुम
- हल्दी / चंदन
- पंचामृत सामग्री
- नारियल (5)
- आम के पत्ते
- 9 प्रकार के धान्य (नवधान्य)
- 9 रंगों के पुष्प
- दीपक + देसी घी
- धूप / अगरबत्ती
- कर्पूर
- पान 11 पत्ते + सुपारी
- फल एवं मिठाई
- मौली/राखी धागा
- गंगाजल
- हवन सामग्री (समिधा, घी, हवन कुण्ड)
- ताँबे के 9 सिक्के/ताँबे का यंत्र
- आरती थाल

7. पूजा क्रम — संक्षिप्त विवरण

क्र.	चरण	विवरण
1	घर शुद्धि	गंगाजल से घर के सभी कमरों में छिड़काव — शुद्धि और पवित्रता।

क्र.	चरण	विवरण
2	गणेश पूजन	विघ्ननाशक गणेश पूजा — संस्कार के शुभारंभ हेतु।
3	विश्वकर्मा पूजन	भवन के शिल्प-देवता विश्वकर्मा को नमन।
4	कलश स्थापना	9 दिशाओं में 9 कलश। मुख्य कलश में वरुण देव का आह्वान।
5	संकल्प	यजमान हाथ में जल-पुष्प लेकर वास्तु शांति का संकल्प।
6	पंचदेव पूजन	गणेश, विष्णु, शिव, दुर्गा और सूर्य — पंचदेव पूजा।
7	नवग्रह पूजन	सभी 9 ग्रहों की शांति पूजा — घर पर कोई ग्रह दोष न हो।
8	वास्तु मंडल पूजन	9 दिशाओं के देवताओं को पुष्प-अक्षत-धूप-दीप से पूजा।
9	वास्तु पुरुष पूजन	वास्तु पुरुष की विस्तृत षोडशोपचार पूजा।
10	होम / हवन	वास्तु होम — अग्नि में नव-समिधाओं से आहुति।
11	गृह प्रदक्षिणा	पूरे घर की 3 बार परिक्रमा — सभी दिशाओं में ऊर्जा का प्रवाह।
12	आरती	वास्तु पुरुष की आरती — परिवार मिलकर।
13	नवधान्य दान	9 दिशाओं में नव-धान्य छिड़कना — समृद्धि हेतु।

8. विस्तृत पूजा विधि

8.1 घर शुद्धि

गंगाजल से भरे पात्र में तुलसी के पत्तों से घर के प्रत्येक कमरे, कोने और दरवाजे पर छिड़काव करते हुए बोलें:

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

Om Apavitrah Pavitro Va Sarvavasthaam Gato'pi Va.

Yah Smaret Pundarikaksham Sa Bahyabhyantarah Shuchih.

अर्थ: जो भगवान का स्मरण करते हैं वे बाहर और अंदर से शुद्ध हो जाते हैं।

8.2 वास्तु पुरुष ध्यान

वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् त्वावेशो अनमीवो भवा नः।

यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे॥

Vastoshpate Pratijanihyasman Tsvaavesho Anamivo Bhava Nah.

Yat Tvemahe Prati Tanno Jushasva Sham No Bhava Dvipade Sham Chatushpade.

अर्थ: हे वास्तु पुरुष, हमें जानो। हमारे घर में शांति से निवास करो। दो पैरों वाले और चार पैरों वाले सभी प्राणियों को सुखी रखो।

8.3 संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः।

अहं (यजमान का नाम) गोत्र (गोत्र का नाम)

मम सकुटुम्ब-सपरिवार गृह-शांत्यर्थ, वास्तु-दोष-निवारणार्थ,

समृद्धि-सौभाग्य-आरोग्य-प्राप्त्यर्थ च

वास्तु पुरुष-गणेश-विश्वकर्मा-नवग्रह प्रीत्यर्थ

वास्तु शांति पूजनं अहं करिष्ये।

I, (yajman's name), perform this Vastu Shanti Pooja for the peace of this home, removal of Vastu doshas, and for the prosperity, auspiciousness and health of my family.

8.4 वास्तु मंडल पूजन — नव दिशाएं

प्रत्येक दिशा की ओर मुख करके उस दिशा के देवता का आह्वान करें और पुष्प व अक्षत अर्पित करें।

दिशा	देवता	मंत्र
पूर्व	इंद्र	ॐ इन्द्राय नमः। पूर्व दिशाधिपतये नमः।
आग्नेय	अग्नि	ॐ अग्नये नमः। आग्नेय दिशाधिपतये नमः।
दक्षिण	यम	ॐ यमाय नमः। दक्षिण दिशाधिपतये नमः।
नैऋत्य	नैऋत	ॐ नैऋतये नमः। नैऋत्य दिशाधिपतये नमः।
पश्चिम	वरुण	ॐ वरुणाय नमः। पश्चिम दिशाधिपतये नमः।
वायव्य	वायु	ॐ वायवे नमः। वायव्य दिशाधिपतये नमः।
उत्तर	कुबेर	ॐ कुबेराय नमः। उत्तर दिशाधिपतये नमः।
ईशान	ईश (शिव)	ॐ ईशानाय नमः। ईशान दिशाधिपतये नमः।
केंद्र	ब्रह्मा	ॐ ब्रह्मणे नमः। ब्रह्मस्थाने नमः।

9. वास्तु पुरुष षोडशोपचार पूजन

#	उपचार	सामग्री	मंत्र
1	आवाहन	पुष्प, अक्षत	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। आवाहयामि।
2	आसन	लाल/पीला कपड़ा	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। आसनं समर्पयामि।
3	पाद्य	जल	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। पाद्यं समर्पयामि।
4	अर्घ्य	जल + पुष्प	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। अर्घ्यं समर्पयामि।
5	आचमन	जल	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। आचमनीयं समर्पयामि।
6	स्नान	पंचामृत	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। स्नानं समर्पयामि।
7	वस्त्र	पीला कपड़ा	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि।
8	यज्ञोपवीत	मौली	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
9	गंध	चंदन + हल्दी	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। गंधं समर्पयामि।
10	पुष्प	नव रंग के पुष्प	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। पुष्पं समर्पयामि।
11	धूप	अगरबत्ती	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। धूपं समर्पयामि।
12	दीप	घी-दीपक	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। दीपं समर्पयामि।
13	नैवेद्य	फल/मिठाई/नैवेद्य	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। नैवेद्यं समर्पयामि।
14	ताम्बूल	पान-सुपारी	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। ताम्बूलं समर्पयामि।
15	दक्षिणा	सिक्का/ताँबा	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। दक्षिणां समर्पयामि।
16	प्रदक्षिणा	—	ॐ वास्तु पुरुषाय नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि।

10. वास्तु होम — प्रमुख मंत्र

वास्तु शांति मंत्र

ॐ वास्तोष्पते शम्भया संसदा ते सक्षीमहि रण्वया गातुमत्या।

पाहि क्षेम उत योगे वरन्नो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥

Om Vastoshpate Shagmaya Samsada Te Sakshimahi Ranvaya Gatumatya.

Pahi Kshem Uta Yoge Varanno Yuyam Pata Svastibhih Sada Nah.

अर्थ: हे वास्तु पुरुष, हम तुम्हारे साथ शांति से रहें। हमारी रक्षा करो — ऐश्वर्य में भी, योग में भी। हमें सदा कुशलता से रखो। — ऋग्वेद

वास्तु गायत्री

ॐ वास्तुपुरुषाय विद्महे भूमिपुत्राय धीमहि।

तन्नो वास्तुः प्रचोदयात्॥

Om Vastupurushaya Vidmahe Bhumiputraya Dhimahi.

Tanno Vastuh Prachodayat.

अर्थ: हम वास्तु पुरुष को जानते हैं, भूमि-पुत्र का ध्यान करते हैं। वास्तु देवता हमें प्रेरित करें।

गृह रक्षा मंत्र (होम आहुति)

ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय। गृहं रक्ष। गृहस्थं रक्ष।

सौभाग्यं देहि। ऐश्वर्यं देहि। आरोग्यं देहि।

शान्तिं देहि। समृद्धिं देहि। स्वाहा॥

Om Namo Bhagavate Vastupurushaya. Protect this home, protect its occupants.

Grant auspiciousness, prosperity, health, peace and abundance. Svaha.

यजमान प्रत्येक "स्वाहा" पर घी की आहुति दें।

11. मुख्य मंत्र

वास्तु पुरुष स्तोत्र

नमस्ते वास्तुपुरुष भूशय्या भीकर प्रभो।
मदृहे धनधान्यादि समृद्धिं कुरु सर्वदा॥

रुद्राणां शतमध्यस्थं सुवर्णसदृशप्रभम्।
वास्तुपुरुषं नमामि सदा शान्तिप्रदं शुभम्॥

*Salutations to Vastu Purusha, who lies on the earth. Always bring wealth and abundance to this home.
I bow to Vastu Purusha, radiant as gold, dwelling among the Rudras, ever-auspicious and peace-granting.*

नवदिशा रक्षा मंत्र

पूर्वे इंद्रो रक्षतु। आग्नेये अग्निः रक्षतु।
दक्षिणे यमो रक्षतु। नैऋत्ये नैऋतिः रक्षतु।
पश्चिमे वरुणो रक्षतु। वायव्ये वायुः रक्षतु।
उत्तरे कुबेरो रक्षतु। ईशाने ईशानः रक्षतु।
ऊर्ध्वे ब्रह्मा रक्षतु। अधो विष्णुः रक्षतु॥

May Indra protect the East, Agni the Southeast, Yama the South, Nirrti the Southwest, Varuna the West, Vayu the Northwest, Kubera the North, Ishana the Northeast, Brahma above, Vishnu below.

यह मंत्र घर की पूर्ण सुरक्षा का कवच है। 10 दिशाओं के देवताओं का आशीर्वाद।

विश्वकर्मा पूजन मंत्र

ॐ आधारशक्तये नमः। ॐ विश्वकर्मणे नमः।
विश्वस्य कर्ता विश्वस्य भर्ता विश्वस्य हर्ता च विश्वकर्मा।
यो विश्वकर्म स नो बुद्धिं ददातु देवायुदाय॥

Om Vishvakarmane Namah. O Vishwakarma, creator of all, grant us wisdom. Bless this dwelling with your divine craft.

12. वास्तु आरती

जय जय वास्तु देवा, प्रभु जय जय वास्तु देवा।

गणेश विश्वकर्मा, भवन के देवा॥ (टेक)

वास्तु पुरुष महाराज, भूमि पर विराजे।

घर-घर में तुम बसते, आनंद बरसाते॥ (जय जय...)

नव दिशाओं के स्वामी, नव देव तुम्हारे।

उत्तर में कुबेर धन, इंद्र पूर्व भारे॥ (जय जय...)

शांति सुख समृद्धि दो, दोष सभी हरो।

परिवार की रक्षा करो, मंगल घर में भरो॥ (जय जय...)

जय जय वास्तु देवा, प्रभु जय जय वास्तु देवा।

गणेश विश्वकर्मा, भवन के देवा॥

13. गृह प्रदक्षिणा

आरती के बाद यजमान और परिवार पूरे घर की **3 बार प्रदक्षिणा** करें। प्रत्येक कमरे में प्रवेश करके वहाँ की मुख्य दिशा के देवता को नमन करें।

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु वास्तु प्रदक्षिणा पदे पदे॥

प्रदक्षिणा के बाद 9 दिशाओं में नवधान्य (9 प्रकार के अनाज) बिखरें — समृद्धि का आह्वान।

14. क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजाविधिं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।

यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे॥

O Lord, forgive all errors in ritual. May this Vastu Puja be complete by your grace.

15. पूजा में भूमिकाएँ

भूमिका	करने वाले	कार्य
मुख्य यजमान	गृह स्वामी	संकल्प, वास्तु पुरुष को पुष्प-अक्षत, होम में आहुति, गृह प्रदक्षिणा।
मंत्र-पाठ	स्वयं यजमान अथवा पुजारी	जो भी उपस्थित होकर मंत्रोच्चारण करें।
यजमान पत्नी	गृहिणी	कलश तैयार करना, दीपक जलाना, आरती थाल, घर सजाना।
परिवार	सभी सदस्य	मंत्रोच्चारण में साथ, 9 दिशाओं में पुष्पांजलि, प्रदक्षिणा में साथ, नवधान्य छिड़कना।
सहायक	परिवार सदस्य	सामग्री देना, 9 दिशाओं में कलश स्थापित करना।

16. यजमान विशेष निर्देश

- पूजा से पहले पूरे घर की गहरी सफाई करें — विशेषतः उत्तर-पूर्व कोने की।
- घर में टूटे-फूटे सामान, पुराने जूते-चप्पल और कबाड़ पहले हटा दें।
- 9 कलश यदि घर में 9 दिशाओं में रखने हों — कमरों के कोनों में रखें।
- ताँबे के 9 सिक्के या ताँबे का वास्तु यंत्र पूजा के बाद भूमि में या घर के केंद्र में रखें।
- नवधान्य (9 अनाज) — पूजा के बाद घर की 9 दिशाओं में बिखेरें।
- गृह प्रदक्षिणा में प्रत्येक कमरे में जाएं और वहाँ की दिशा के देवता को नमन करें।
- वास्तु दोष के लिए विशेष उपाय भी अपनाए जा सकते हैं — जैसे स्फटिक, पिरामिड, श्री यंत्र।
- पूजा के बाद घर में नमक+हल्दी के पानी से पोंछा लगाएं।

17. संकल्प पत्र

विवरण	भरें
यजमान का नाम	_____
गोत्र	_____
घर का पता / शहर	_____
पूजा का कारण (नया घर/दोष/वार्षिक)	_____
प्रमुख समस्या (यदि दोष निवारण)	_____

विवरण	भरें
विशेष कामना	
पूजा की तिथि	

वास्तु पूजा विधि | Vastu Pooja Vidhi | Version 1.0 | Dharma Path USA Foundation
यह दस्तावेज़ Guided Pooja Seva हेतु निर्मित है। इसमें पूजा की पूर्ण विधि और मंत्र क्रमबद्ध रूप से दिए गए हैं।